Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
February 2025
ISSN 2229-3388

# छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले के चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं के जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

**[1]. आलोक कुमार साहू, [2]. डॉ. यशपाल सिंह**

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

पर्यवेक्षक,शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

**1. सारांश:** प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले के चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं के जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह जानना आवश्यक है कि लिंग के आधार पर इन दोनों चरों में कोई सार्थक अंतर पाया जाता है अथवा नहीं।

इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा तुलनात्मक शोध अभिकल्प को आधार बनाया गया। न्यादर्श के रूप में कोरबा जिले के चयनित विद्यालयों से कुल 200 जनजातीय विद्यार्थियों — 100 छात्र तथा 100 छात्राओं — का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। आँकड़ा संकलन हेतु अंग्रेजी भाषा चुनौती मापनी तथा शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों के संदर्भ में छात्र एवं छात्राओं के मध्य सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें छात्राओं की अपेक्षा छात्रों ने कुछ अधिक चुनौतियाँ अनुभव कीं। शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में भी छात्राओं की उपलब्धि छात्रों की अपेक्षा कुछ अधिक पायी गयी, और यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक रहा।

**मुख्य शब्द:** जनजातीय छात्र, जनजातीय छात्राएँ, अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियाँ, शैक्षिक उपलब्धि, तुलनात्मक अध्ययन, लिंग भेद, कोरबा।

## 2. प्रस्तावना

शिक्षा के क्षेत्र में लिंग आधारित अंतर सदैव अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। यह जानना उपयोगी होता है कि छात्र एवं छात्राओं के अधिगम, उनकी कठिनाइयों तथा उपलब्धि में किस प्रकार के अंतर पाये जाते हैं, ताकि शिक्षण प्रक्रिया को दोनों वर्गों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सके।

छत्तीसगढ़ राज्य का कोरबा जिला जनजातीय बहुल क्षेत्र है, जहाँ अधिकांश विद्यार्थियों की मातृभाषा स्थानीय जनजातीय बोली है। इन विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी एक पूर्णतः नवीन भाषा होती है, जिसके अधिगम में अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं। यह संभव है कि सामाजिक, पारिवारिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों से ये कठिनाइयाँ छात्र एवं छात्राओं में भिन्न-भिन्न रूप में प्रकट हों।

कक्षा 9वीं एक महत्वपूर्ण संधिकालीन स्तर है, जहाँ भाषा संबंधी आधारभूत दक्षताओं की आवश्यकता बढ़ जाती है। इसी पृष्ठभूमि में यह अध्ययन छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

## 3. समस्या का कथन

प्रस्तुत शोध की समस्या को निम्नलिखित रूप में शब्दबद्ध किया गया है —

**"छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले के चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं के जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।"**

## 4. संक्रियात्मक परिभाषाएँ

**जनजातीय छात्र एवं छात्राएँ**

इस अध्ययन में जनजातीय छात्र एवं छात्राओं से तात्पर्य कोरबा जिले की अनुसूचित जनजातियों से संबंधित उन छात्रों तथा छात्राओं से है जो चयनित विद्यालयों में कक्षा 9वीं में अध्ययनरत हैं।

**अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियाँ**

इससे आशय अंग्रेजी भाषा के श्रवण, वाचन, पठन तथा लेखन के दौरान अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों से है, जिन्हें शोधकर्ता द्वारा निर्मित मापनी पर प्राप्त अंकों द्वारा मापा गया है।

**शैक्षिक उपलब्धि**

इससे तात्पर्य विद्यार्थी द्वारा शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण में अर्जित अंकों से है, जो उसके अधिगम के स्तर को प्रदर्शित करते हैं।

## 5. शोध के उद्देश्य

1. कक्षा 9वीं के जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों की तुलना करना।
2. कक्षा 9वीं के जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
3. अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों तथा शैक्षिक उपलब्धि में लिंग आधारित अंतर का अध्ययन करना।
4. अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर उपयुक्त शैक्षिक सुझाव प्रस्तुत करना।

## 6. शोध प्रश्न

5. क्या जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों में कोई सार्थक अंतर है?
6. क्या जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर है?

## 7. शोध परिकल्पनाएँ

इस अध्ययन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया —

7. जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
8. जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

## 8. शोध का महत्व एवं औचित्य

यह अध्ययन लिंग आधारित दृष्टिकोण से जनजातीय विद्यार्थियों की भाषा संबंधी कठिनाइयों तथा उपलब्धि को समझने में सहायक है। इसका महत्व निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट होता है —

- इससे शिक्षक छात्र एवं छात्राओं की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण रणनीतियाँ अपना सकेंगे।

- यह अध्ययन जनजातीय छात्राओं की शिक्षा को सुदृढ़ बनाने हेतु नीति निर्माताओं का मार्गदर्शन करेगा।
- यह अध्ययन लैंगिक समानता एवं समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होगा।
- भावी शोधकर्ताओं के लिए यह अध्ययन एक उपयोगी संदर्भ प्रदान करेगा।

### 9. शोध का सीमांकन

- यह अध्ययन केवल छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले तक सीमित है।
- यह अध्ययन केवल कक्षा 9वीं के जनजातीय छात्र एवं छात्राओं पर केंद्रित है।
- इस अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों — 100 छात्र तथा 100 छात्राओं — को सम्मिलित किया गया है।
- यह अध्ययन केवल अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिंग आधारित तुलना तक सीमित है।

### 10. संबंधित साहित्य की समीक्षा

किसी भी शोध की दृढ़ता उसके पूर्ववर्ती अध्ययनों के अवलोकन पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित कुछ प्रमुख अध्ययन निम्नलिखित हैं —

देवी (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि भाषा अधिगम के क्षेत्र में छात्राएँ प्रायः छात्रों की अपेक्षा बेहतर प्रदर्शन करती हैं, जिसका कारण उनकी अधिक एकाग्रता एवं अनुशासन है।

राठौर (2017) ने जनजातीय विद्यार्थियों पर किये गये अपने तुलनात्मक अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि छात्रों एवं छात्राओं की भाषा संबंधी कठिनाइयों में सार्थक अंतर पाया जाता है।

ठाकुर (2018) ने अपने अध्ययन में बताया कि सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश का प्रभाव छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर भिन्न-भिन्न रूप से पड़ता है।

नायक (2019) ने छत्तीसगढ़ के जनजातीय क्षेत्रों पर केंद्रित अपने अध्ययन में पाया कि छात्राओं को अध्ययन हेतु अपेक्षाकृत कम अवसर मिलने के बावजूद उनकी उपलब्धि संतोषजनक रहती है।

बघेल (2020) ने अपने अध्ययन में यह स्थापित किया कि छात्रों में बोलने का संकोच छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया जाता है।

**समीक्षा का निष्कर्ष**

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि भाषा संबंधी कठिनाइयों एवं शैक्षिक उपलब्धि में लिंग आधारित अंतर संभव है। तथापि कोरबा जिले के जनजातीय छात्र एवं छात्राओं पर केंद्रित ऐसा तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है, जो प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य सिद्ध करता है।

### 11. शोध प्रविधि

### 11.1 शोध अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत तुलनात्मक शोध अभिकल्प को अपनाया गया है, क्योंकि अध्ययन का उद्देश्य दो समूहों — छात्र तथा छात्राओं — के मध्य अंतर का अध्ययन करना है।

### 11.2 जनसंख्या एवं न्यादर्श

इस अध्ययन की जनसंख्या में कोरबा जिले के समस्त शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं के जनजातीय विद्यार्थी सम्मिलित हैं। इनमें से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 100 छात्र तथा 100 छात्राओं, अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों का न्यादर्श चयनित किया गया।

| समूह | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| छात्र | 100 | 50 |
| छात्राएँ | 100 | 50 |
| योग | 200 | 100 |

*सारणी 1 : न्यादर्श का लिंग आधारित वितरण*

### 11.3 शोध उपकरण

आँकड़ा संकलन हेतु दो उपकरणों का प्रयोग किया गया —

- अंग्रेजी भाषा चुनौती मापनी : उच्चारण, शब्दावली, व्याकरण, पठन, लेखन तथा बोलने में संकोच जैसे आयामों को मापने वाली शोधकर्ता निर्मित मापनी।
- शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण : विद्यार्थियों की समग्र उपलब्धि के मापन हेतु प्रयुक्त परीक्षण, जिसका अधिकतम प्राप्तांक 100 था।

### 11.4 आँकड़ा संकलन प्रक्रिया

शोधकर्ता ने चयनित विद्यालयों में स्वयं उपस्थित होकर छात्र एवं छात्राओं से सहज वातावरण में आँकड़ों का संकलन किया तथा उन्हें उत्तरों की गोपनीयता का आश्वासन दिया।

### 11.5 सांख्यिकीय तकनीक

प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान तथा मानक विचलन का प्रयोग किया गया, जबकि दोनों समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

## 12. आँकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन

### 12.1 अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों की तुलना

प्रथम परिकल्पना के परीक्षण हेतु छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों के प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण नीचे प्रस्तुत है।

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-मान |
|---|---|---|---|---|
| छात्र | 100 | 99.6 | 12.4 | 3.42 (सार्थक) |

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-मान |
|---|---|---|---|---|
| छात्राएँ | 100 | 93.2 | 13.8 | |

*सारणी 2 : भाषा संबंधी चुनौतियों की लिंग आधारित तुलना*

सारणी 2 से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान (99.6) छात्राओं के मध्यमान (93.2) से अधिक है, जो दर्शाता है कि छात्रों ने छात्राओं की अपेक्षा अधिक भाषा संबंधी चुनौतियाँ अनुभव कीं। दोनों समूहों के मध्य टी-मान 3.42 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः प्रथम शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं की भाषा संबंधी चुनौतियों में सार्थक अंतर विद्यमान है।

### 12.2 शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

द्वितीय परिकल्पना के परीक्षण हेतु छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण नीचे प्रस्तुत है।

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-मान |
|---|---|---|---|---|
| छात्र | 100 | 49.8 | 11.2 | 2.96 (सार्थक) |
| छात्राएँ | 100 | 55.6 | 12.6 | |

*सारणी 3 : शैक्षिक उपलब्धि की लिंग आधारित तुलना*

सारणी 3 दर्शाती है कि छात्राओं का मध्यमान (55.6) छात्रों के मध्यमान (49.8) से अधिक है, अर्थात् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की अपेक्षा बेहतर है। दोनों समूहों के मध्य टी-मान 2.96 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना भी अस्वीकृत हो जाती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर विद्यमान है।

### 12.3 तुलनात्मक चित्रण

उपर्युक्त दोनों विश्लेषणों से एक रोचक प्रवृत्ति उभरती है — जिन छात्राओं ने अपेक्षाकृत कम भाषा संबंधी चुनौतियाँ अनुभव कीं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की अपेक्षा अधिक रही। यह प्रवृत्ति इस ओर संकेत करती है कि भाषा संबंधी चुनौतियों में कमी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि से संबंधित है।

| तुलना का आधार | छात्र | छात्राएँ |
|---|---|---|
| भाषा संबंधी चुनौतियाँ (मध्यमान) | 99.6 | 93.2 |
| शैक्षिक उपलब्धि (मध्यमान) | 49.8 | 55.6 |

*सारणी 4 : समग्र तुलनात्मक चित्रण*

## 13. प्रमुख निष्कर्ष

9. जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें छात्रों ने अधिक चुनौतियाँ अनुभव कीं।

10. जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें छात्राओं की उपलब्धि अधिक रही।

11. छात्राओं में भाषा संबंधी चुनौतियाँ कम तथा शैक्षिक उपलब्धि अधिक रहने की प्रवृत्ति देखी गयी।

12. लिंग एक ऐसा कारक सिद्ध हुआ जो भाषा संबंधी चुनौतियों तथा शैक्षिक उपलब्धि दोनों को प्रभावित करता है।

## 14. परिचर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष देवी (2016) तथा नायक (2019) के अध्ययनों से मेल खाते हैं, जिनमें छात्राओं का प्रदर्शन भाषा अधिगम के क्षेत्र में बेहतर पाया गया था। छात्राओं की अधिक एकाग्रता, अनुशासन तथा अध्ययन के प्रति गंभीरता इस अंतर के संभावित कारण हो सकते हैं।

दूसरी ओर बघेल (2020) के अनुसार छात्रों में बोलने का संकोच अधिक पाया जाता है, जो प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों की पुष्टि करता है। इन निष्कर्षों के आधार पर यह आवश्यक प्रतीत होता है कि शिक्षण प्रक्रिया में छात्र एवं छात्राओं की भिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाये।

## 15. शैक्षिक निहितार्थ

- शिक्षकों को छात्र एवं छात्राओं की भिन्न-भिन्न भाषा संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण रणनीतियाँ अपनानी चाहिए।
- छात्रों में बोलने के संकोच को दूर करने हेतु विशेष मौखिक अभ्यास कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।
- छात्राओं की बेहतर उपलब्धि को और प्रोत्साहित करने हेतु उन्हें पर्याप्त अध्ययन अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।
- समावेशी एवं लैंगिक दृष्टि से संवेदनशील शिक्षण वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए।

## 16. सुझाव

13. छात्र एवं छात्राओं हेतु उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप पृथक-पृथक भाषा अभ्यास क्रियाकलापों का आयोजन किया जाये।

14. छात्रों के बोलने के संकोच को दूर करने हेतु समूह वार्तालाप एवं भूमिका अभिनय जैसी विधियों का प्रयोग किया जाये।

15. जनजातीय छात्राओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु छात्रवृत्ति एवं सुविधाओं की व्यवस्था की जाये।

16. शिक्षकों को लैंगिक दृष्टि से संवेदनशील शिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जाये।

## 17. भावी शोध हेतु संकेत

- इसी प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन अन्य जिलों एवं अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
- ग्रामीण एवं नगरीय जनजातीय विद्यार्थियों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- लिंग के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

## 18. उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कोरबा जिले के जनजातीय छात्र एवं छात्राओं की अंग्रेजी भाषा संबंधी चुनौतियों तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर विद्यमान है। छात्राओं ने अपेक्षाकृत कम चुनौतियाँ अनुभव कीं तथा बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्रदर्शित की। इन निष्कर्षों के आधार पर

यह आवश्यक है कि शिक्षण प्रक्रिया को दोनों वर्गों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाये, ताकि सभी जनजातीय विद्यार्थियों की समग्र शैक्षिक उपलब्धि में सुधार लाया जा सके। यह अध्ययन शिक्षकों, नीति निर्माताओं तथा भावी शोधकर्ताओं के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान करता है।

**19. संदर्भ ग्रंथ सूची**

[1] ठाकुर, व. (2018). शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक. शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 11(2), 38–50।

[2] देवी, स. (2016). भाषा अधिगम में लिंग आधारित अंतर : एक अध्ययन. शिक्षा दर्पण, 7(4), 55–66।

[3] नायक, र. (2019). छत्तीसगढ़ की जनजातीय छात्राओं की शिक्षा : एक अध्ययन. रायपुर : राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषद्।

[4] बघेल, ह. (2020). जनजातीय विद्यार्थियों में भाषा अधिगम संबंधी संकोच. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 9(2), 28–40।

[5] राठौर, द. (2017). जनजातीय शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन. नयी दिल्ली : शिक्षा प्रकाशन।